Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
(A National bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2395-7069(Print), Impact Factor: (Cosmos 7.650 & I2OR 5.120), Volume 12, No. 04, October-December, 2026, pp. 89-100

बिहार में स्वयं सहायता समूह में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक–सामाजिक स्थितिः जहानाबाद जिला के विशेष संदर्भ में

अंजनी कुमार[1*] एवं डॉ. अंशु कुमार मलिक[2]

[1]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।
[2]सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद, बिहार।

[*]Corresponding Author: anjanikumar.ceoghoshi@gmail.com

Citation: *कुमार, अंजनी एवं मलिक, अंशु (2026). बिहार में स्वयं सहायता समूह में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक–सामाजिक स्थितिः जहानाबाद जिला के विशेष संदर्भ में. Journal of Commerce, Economics & Computer Science, 12(04), 89–100.*

सार

स्वयं सहायता समूह (SHG) ग्रामीण निर्धन महिलाओं को बचत, ऋण और सामूहिक कार्य से जोड़ने का प्रमुख माध्यम हैं। बिहार में जीविका कार्यक्रम 2007 से महिलाओं को SHG में संगठित कर रहा है और सितंबर 2025 तक 11.4 लाख से अधिक SHG तथा 1.40 करोड़ परिवार इससे जुड़ चुके हैं। यह शोध–पत्र पूरी तरह द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर बिहार की SHG महिलाओं की आर्थिक–सामाजिक पृष्ठभूमि और कार्यक्रम के पैमाने का विश्लेषण करता है, और जहानाबाद जिले को विशेष संदर्भ के रूप में बिहार से तुलना करके देखता है। जनगणना 2011, NFHS–5 और NFHS–4 के संकेतक तथा जीविका की आधिकारिक प्रगति रिपोर्ट का प्रतिशत, अनुपात और अंतर जैसी सरल सांख्यिकी से विश्लेषण किया गया है। बिहार में महिला साक्षरता 51.50 प्रतिशत है जबकि पुरुषों की 71.20 प्रतिशत; जहानाबाद में यह अंतर और चौड़ा, 22.65 प्रतिशत–बिंदु, है। बिहार के 38 जिलों में जहानाबाद साक्षरता में 10वें और लिंगानुपात में 15वें स्थान पर है। बिहार में 15–49 वर्ष की केवल 55 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं और केवल 17 प्रतिशत ने पिछले वर्ष कोई काम किया। जीविका के अंतर्गत 10.5 लाख SHG बचत खाते, 98.06 प्रतिशत ऋण–वापसी और 80 लाख से अधिक बीमा नामांकन दर्ज हैं। निष्कर्ष यह है कि बिहार में SHG की सफलता को केवल ऋण से नहीं, बल्कि साक्षरता, पोषण और निर्णय–क्षमता से भी मापा जाना चाहिए।

शब्दकोशः *स्वयं सहायता समूह, जीविका, महिला सशक्तिकरण, बिहार, जहानाबाद, द्वितीयक आँकड़े स्वयं सहायता समूह, जीविका, महिला सशक्तिकरण, बिहार, जहानाबाद, द्वितीयक आँकड़े।*

प्रस्तावना

गरीब ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के पास प्रायः गिरवी रखने को संपत्ति नहीं होती, शिक्षा कम होती है और गाँव से बाहर आने–जाने की स्वतंत्रता सीमित होती है। इसलिए वे अनौपचारिक साहूकारों पर निर्भर रहती हैं। SHG मॉडल इसका उत्तर देता हैः समान पृष्ठभूमि की महिलाओं का एक छोटा समूह नियमित बचत करता है, आपस में उधार देता है और आगे चलकर बैंक से जुड़ता है। बिहार में बिहार ग्रामीण आजीविका

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

परियोजना, जिसे जीविका कहा जाता है, 2007 में राज्य सरकार और विश्व बैंक के वित्त–पोषण से शुरू हुई। इसका उद्देश्य निर्धन परिवारों की महिलाओं को SHG में संगठित करना है, जिन्हें आगे ग्राम संगठन (VO) में जोड़ा जाता है (आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया; हॉफ़मैन व अन्य, 2018)।

बिहार देश के सबसे निर्धन राज्यों में है और यहाँ आय तथा लैंगिक असमानता गहरी है (विश्व बैंक डेटा कैटलॉग, जीविका चरण–1 सर्वेक्षण)। राज्य की 88.7 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है, इसलिए गाँव आधारित महिला संगठन सामाजिक परिवर्तन का बड़ा साधन हो सकते हैं। जहानाबाद मगध क्षेत्र का छोटा और घनी आबादी वाला जिला है जहाँ जीविका के अंतर्गत ैभ्ळ महिलाएँ पोषण और स्वच्छता जैसे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं (विश्व बैंक ब्लॉग; खान, 2017)। शोध–पत्र के तीन उद्देश्य हैंः

- बिहार में महिलाओं की जनसांख्यिकीय, शैक्षिक और रोज़गार संबंधी स्थिति का वर्णन करना।
- जीविका के पैमाने, वित्तीय समावेशन और सामाजिक गतिविधियों को आधिकारिक आँकड़ों से समझना।
- जहानाबाद जिले की महिलाओं की स्थिति की बिहार से तुलना करना और नीतिगत सुझाव देना।

सैद्धांतिक ढाँचा

शोध–पत्र काबीर (1999) की सशक्तिकरण की धारणा अपनाता है, जिसके अनुसार सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें जिन लोगों को पहले जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता से वंचित रखा गया था, उनमें यह क्षमता बढ़ती है। काबीर इसके तीन जुड़े भाग बताती हैंः संसाधन (जैसे शिक्षा और ऋण), एजेंसी यानी निर्णय लेने की शक्ति, और उपलब्धियाँ (जैसे बेहतर स्वास्थ्य)। साक्षरता और रोज़गार संसाधन के संकेतक हैं, ऋण और बचत संस्थागत संसाधन हैं, और पोषण उपलब्धि का संकेतक है। यह ढाँचा आर्थिक लाभ को सामाजिक परिवर्तन से अलग करके देखने में भी मदद करता हैः किसी महिला को ऋण मिल सकता है (संसाधन), पर उसका उपयोग कौन तय करता है (एजेंसी) यह अलग प्रश्न है।

साहित्य समीक्षा

- **जीविका की संरचना**

जीविका निर्धन परिवारों की महिलाओं को लगभग 15–20 सदस्यों वाले बचत और ऋण आधारित SHG में संगठित करता है। इन समूहों को प्रशिक्षण और सुदृढ़ीकरण दिया जाता है, फिर वे ग्राम संगठन (VO) और क्लस्टर स्तरीय संघ (CLF) में जुड़ते हैं। साथ ही बैंक से जोड़ने और विस्तार सेवाओं के ज़रिये आजीविका और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की व्यवस्था है (विश्व बैंक डेटा कैटलॉग)। ग्राम संगठन का सामाजिक दायित्व भी है कि वह गाँव की समस्याओं की पहचान करे और परियोजना कर्मियों के साथ मिलकर उनके व्यावहारिक समाधान निकाले (आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया)। इस प्रकार ैभ्ळ केवल बचत समूह नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन का आधार भी हैं।

- **बिहार में प्रभाव के प्रमाण**

बिहार के लिए सबसे मज़बूत प्रमाण हॉफ़मैन व अन्य (2018) का 3पम के लिए किया गया क्लस्टर–यादृच्छिक परीक्षण है। इसमें पूरे गाँवों को संयोग से कार्यक्रम पाने या न पाने वाले समूहों में बाँटा जाता है ताकि दोनों की निष्पक्ष तुलना हो सके। अध्ययन में सात जिलों के 16 प्रखंडों की 180 पंचायतें शामिल थीं; आधार–रेखा सर्वेक्षण जुलाई से अक्टूबर 2011 के बीच हुआ, जब चुनी हुई पंचायतों में जीविका काम नहीं कर रहा था (दत्ता, हॉफ़मैन और राव, 2015)। परिणामों में SHG सदस्यता और सस्ते ऋण में बड़ी वृद्धि मिली, परंतु महिला सशक्तिकरण पर मिले–जुले प्रभाव मिले जिनकी कुल दिशा स्पष्ट नहीं थी, और उपभोग के मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं दिखा। एक पहले के मिलान–आधारित गाँव–तुलना अध्ययन में लगभग तीन वर्ष (2008 से 2011) में खुले में शौच में मामूली कमी और खाद्य सुरक्षा में मामूली सुधार मिला (आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया)। तीन

जिलों के छह प्रखंडों में आईएफ़एमआर लीड के गुणात्मक अध्ययन ने पाया कि चार वर्ष से अधिक सहयोग के बाद भी आजीविका कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी, यद्यपि कार्यक्रम की गतिविधियाँ सीमांत परिवारों की महिलाओं की ज़रूरतों से मेल खाती थीं।

- **स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता**

जीविका बहुक्षेत्रीय अभिसरण (JEEViKA–MC) पायलट को सहरसा जिले की 12 ग्राम पंचायतों में चलाया गया, जिसमें SHG की महिलाओं के ज़रिये स्वास्थ्य और पोषण व्यवहार परिवर्तन संवाद और सेवाओं तक पहुँच बढ़ाने के प्रयास किए गए (आईएफ़पीआरआई)। मंडल व अन्य (2025) ने जीविका SHG के माध्यम से मातृ स्वास्थ्य, नवजात देखभाल और बाल पोषण पर तकनीकी सहयोग कार्यक्रम का अध्ययन किया है। जहानाबाद के संदर्भ में विश्व बैंक के लेख में मखदुमपुर प्रखंड सहित SHG सदस्यों को पोषण सखी के रूप में प्रशिक्षित किए जाने का वर्णन है और बताया गया है कि जिले की लगभग एक–तिहाई महिलाएँ निरक्षर हैं। खान (2017) के अनुसार जहानाबाद के कलानौर और धरनई गाँवों की SHG महिलाओं ने परिवारों को शौचालय बनाने और उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। मधुबनी जिले के 251 परिवारों पर आधारित अध्ययन में जीविका से जुड़ाव और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध मिला (सोशल साइंस जर्नल फ़ॉर एडवांस्ड रिसर्च, 3(6)), पर संबंध का अर्थ कारण सिद्ध होना नहीं है। जीविका की लागत और प्रतिफल का अध्ययन सिवाच व अन्य (2020) कर रहे हैं।

तालिका 1. बिहार पर प्रमुख अध्ययनों का सार

अध्ययन	क्षेत्र	मुख्य निष्कर्ष
हॉफ़मैन व अन्य (2018)	बिहार, 7 जिले	SHG सदस्यता और ऋण में बड़ी वृद्धि; सशक्तिकरण पर मिले-जुले प्रभाव; उपभोग पर प्रभाव नहीं
आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया (2008-11 का मूल्यांकन)	बिहार	खुले में शौच में मामूली कमी; खाद्य सुरक्षा में मामूली सुधार
आईएफ़एमआर लीड	बिहार, 3 जिले	चार वर्ष बाद भी महिलाओं की भागीदारी सीमित
मंडल व अन्य (2025)	बिहार	SHG मंच से स्वास्थ्य और पोषण व्यवहार को प्रभावित करने का अध्ययन
मधुबनी अध्ययन (SSJAR, 3(6))	मधुबनी	251 परिवार; जीविका से जुड़ाव और आर्थिक सशक्तिकरण में सकारात्मक संबंध

आँकड़े और विधि

अध्ययन पूरी तरह द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। जनसंख्या और साक्षरता के आँकड़े भारत की जनगणना 2011 से हैं, जैसा Census2011.co.in और प्दकपैंजंज के बिहार तथा जहानाबाद पृष्ठों पर दिया गया है। महिलाओं के शिक्षा और रोज़गार के आँकड़े छठे–5 (2019–21) की बिहार रिपोर्ट से हैं। जहानाबाद और बिहार के पोषण के आँकड़े NFHS–4 (2015–16) पर आधारित POSHAN जिला पोषण प्रोफ़ाइल से लिए गए हैं। जीविका के आँकड़े बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोन्नति समिति (BRLPS) की 72वीं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट (जुलाई–सितंबर 2025) से हैं।

विश्लेषण में केवल सरल सांख्यिकी का प्रयोग हुआ है। प्रतिशत यानी भाग को पूरे से भाग देकर 100 से गुणा करना। लिंगानुपात यानी प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या। प्रतिशत–बिंदु (pp) अंतर यानी एक प्रतिशत को दूसरे से घटाना। लैंगिक समानता सूचकांक (GPI) महिला मान को पुरुष मान से भाग देकर निकलता है; 1 का अर्थ बराबरी है और उससे कम का अर्थ है कि महिलाएँ पीछे हैं। निरक्षरता दर साक्षरता दर को 100 से घटाने पर मिलती है। राज्य और जिले की तुलना के लिए दोनों के मानों का अंतर लिया गया है।

बिहार के 38 जिलों की तुलना के लिए जनगणना 2011 के जिला–वार साक्षरता दर और लिंगानुपात (Census2011-co-in की बिहार जिला–सूची) पर पाँच सरल माप निकाले गए। औसत सभी जिलों के मानों का जोड़ भाग जिलों की संख्या है। माध्यिका वह मान है जिसके ऊपर और नीचे आधे जिले हैं। मानक विचलन बताता है कि जिले औसत से औसतन कितनी दूरी पर हैं। z–मान बताता है कि कोई जिला औसत से कितने मानक विचलन ऊपर (+) या नीचे (–) है। सहसंबंध गुणांक (r) –1 से +1 के बीच होता है और बताता है कि दो चीज़ें साथ–साथ बढ़ती हैं या नहीं; 0 के पास का अर्थ है कि संबंध कमज़ोर है।

परिणाम

- **बिहार की जनसंख्या और साक्षरता**

तालिका 2. बिहार की जनसंख्या और साक्षरता, जनगणना 2011

संकेतक	मान	कैसे प्राप्त
कुल जनसंख्या	104,099,452	जनगणना
पुरुष	54,278,157	जनगणना
महिलाएँ	49,821,295	जनगणना
जनसंख्या में महिलाओं का हिस्सा	47.9%	49,821,295 / 104,099,452
लिंगानुपात (प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाएँ)	918	जनगणना
ग्रामीण जनसंख्या का हिस्सा	88.7%	जनगणना
साक्षरता दर: कुल / पुरुष / महिला (%)	61.80 / 71.20 / 51.50	जनगणना
साक्षरता अंतर (पु. - म.)	19.70 pp	71.20 - 51.50
निरक्षरता दर: पुरुष / महिला (%)	28.80 / 48.50	100 - साक्षरता दर
लैंगिक समानता सूचकांक (GPI)	0.72	51.50 / 71.20

स्रोतः जनगणना 2011, Census2011-co-in

बिहार में हर 1,000 पुरुषों पर 918 महिलाएँ हैं और राज्य की लगभग नौ–दसवाँ आबादी गाँवों में रहती है। महिला साक्षरता दर (51.50 प्रतिशत) पुरुष दर (71.20 प्रतिशत) से 19.70 अंक कम है। महिलाओं में निरक्षरता दर (48.50 प्रतिशत) पुरुषों की (28.80 प्रतिशत) से 1.68 गुना है। लैंगिक समानता सूचकांक 0.72 बताता है कि बिहार की महिलाएँ साक्षरता में पुरुषों के स्तर का लगभग तीन–चौथाई ही पा सकी हैं।

- **महिलाओं की शिक्षा और रोज़गार, NFHS–5**

तालिका 3. बिहार में 15–49 वर्ष की महिलाओं की स्थिति, NFHS–5 (2019–21)

संकेतक	मान (%)	टिप्पणी
साक्षर महिलाएँ	55	कम से कम कक्षा 9 या साक्षरता परीक्षण पास
जो कभी स्कूल नहीं गईं	39	—
12 या अधिक वर्ष की शिक्षा पूरी की	16	—
पिछले 12 महीनों में कोई काम नहीं किया	83	—
पिछले 12 महीनों में कोई काम किया (गणना)	17	100 – 83
खेती का काम / गैर-कृषि काम	1 / 16	कुल 17
परिवारों में बैंक या डाकघर खाता (घर-स्तर)	96	—
ग्रामीण परिवारों में मोबाइल फ़ोन (घर-स्तर)	93	—

स्रोतः NFHS–5, बिहार रिपोर्ट (2019–21)।

NFHS–5 के अनुसार बिहार में 15–49 वर्ष की केवल 55 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं, 39 प्रतिशत कभी स्कूल नहीं गईं और केवल 16 प्रतिशत ने 12 या अधिक वर्ष की शिक्षा पूरी की है। 83 प्रतिशत ने पिछले 12 महीनों में कोई काम नहीं किया, यानी केवल 17 प्रतिशत महिलाएँ किसी काम में लगी थीं, और उनमें से भी

ज़्यादातर (16 अंक) गैर–कृषि कार्य में। परिवारों में बैंक या डाकघर खाता लगभग सार्वभौमिक (96 प्रतिशत) है। SHG महिला के अपने नाम के खाते के ज़रिये बचत और ऋण पर उसका नियंत्रण बढ़ा सकते हैं।

- **जीविका का पैमाना और संस्थागत ढाँचा**

तालिका 4. बिहार में जीविकाः संस्थाएँ, सितंबर 2025 तक संचयी

संकेतक	मान	गणना
स्वयं सहायता समूह (SHG)	1,140,250	रिपोर्ट
संगठित परिवार	1.40 करोड़	रिपोर्ट
ग्राम संगठन (VO)	73,515	रिपोर्ट
क्लस्टर स्तरीय संघ (CLF)	1,684	रिपोर्ट
सहकारी समिति के रूप में पंजीकृत CLF	644	रिपोर्ट
प्राथमिक सहकारी समितियों में नामांकित SHG सदस्य	15,32,896	रिपोर्ट
प्रति SHG परिवार	12.3	14,000,000 / 1,140,250
प्रति VO में SHG	15.5	1,140,250 / 73,515
प्रति CLF में VO	43.7	73,515 / 1,684

स्रोतः BRLPS, जीविका 72वीं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट (जुलाई–सितंबर 2025)।

जीविका आज बिहार के 38 जिलों में 11.4 लाख से अधिक समूहों तक पहुँच चुका है। औसतन एक SHG में लगभग 12 परिवार हैं, एक ट८ में लगभग 15.5 SHG जुड़े हैं और एक CLF में लगभग 44 VOA 644 CLF सहकारी समिति के रूप में पंजीकृत हैं, जो संकेत देता है कि संगठन अब केवल समूह नहीं, बल्कि औपचारिक आर्थिक संस्थाओं का रूप ले रहे हैं।

- **वित्तीय समावेशन**

तालिका 5. जीविकाः वित्त और बीमा, सितंबर 2025 तक

संकेतक	मान	अवधि
SHG के बचत खाते खोले गए	10,49,411	संचयी
बचत खाते / SHG की संख्या (%)	92.0	गणना: 10,49,411 / 11,40,250
कुल बैंक ऋण प्रवाह	₹59,156 करोड़	संचयी
SHG को बैंक ऋण वितरण	₹6,030 करोड़	अप्रैल-सितंबर 2025
सामुदायिक निवेश कोष (CIF) वितरित	₹2,013 करोड़	2025-26 में सितंबर तक
CLF से जुड़ा आंतरिक पूँजीकरण कोष (ICF)	₹6,196 करोड़	सितंबर 2025 तक
आंतरिक कोष से उद्यम-वित्त	₹366.26 करोड़, 56,348 सदस्य	संचयी
प्रति सदस्य औसत उद्यम-वित्त	लगभग ₹65,000	गणना
ऋण वापसी दर	98.06%	सितंबर 2025 के अंत तक
सक्रिय बैंक सखी	6,427	सितंबर 2025
बैंक सखी द्वारा खोले गए खाते	1,50,570	अप्रैल-सितंबर 2025
PMJJBY / PMSBY बीमा नामांकन	80,52,047 / 91,11,689	संचयी
निपटाए गए बीमा दावे	10,069 (₹128.21 करोड़)	संचयी

स्रोतः BRLPS, जीविका 72वीं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट (जुलाई–सितंबर 2025)।

वित्तीय समावेशन के आँकड़े बड़े हैंः लगभग 92 प्रतिशत की दर से SHG के बचत खाते खोले गए हैं, कुल बैंक ऋण प्रवाह ₹59,156 करोड़ रहा है और ऋण वापसी दर 98.06 प्रतिशत है, जो समूह–आधारित ऋण में अनुशासन दर्शाती है। आंतरिक कोष से 56,348 सदस्यों को ₹366.26 करोड़ का उद्यम–वित्त मिला, यानी औसतन लगभग ₹65,000 प्रति सदस्य। बीमा नामांकन 80 से 91 लाख के बीच है, जो परिवारों में जोखिम–सुरक्षा के विस्तार का संकेत है।

- **आजीविका और स्वास्थ्य गतिविधियाँ**

तालिका 6: जीविका की आजीविका, स्वास्थ्य और सामाजिक गतिविधियाँ

संकेतक	मान	अवधि
धान की उन्नत पद्धति अपनाने वाले किसान	20.12 लाख	जुलाई-सितंबर 2025
किचन गार्डन अपनाने वाले किसान	17.72 लाख	जुलाई-सितंबर 2025
सब्ज़ी की खेती करने वाले किसान	11.61 लाख	जुलाई-सितंबर 2025
पशु सखी	7,781	संचयी
एकीकृत पोल्ट्री विकास योजना में सदस्य	2,21,571	संचयी
दीदी की रसोई इकाइयाँ	280	संचयी
PMFME के अंतर्गत उद्यम	34,961	संचयी
आयुष्मान भारत कार्ड वाले परिवार	79 लाख	संचयी
स्वस्थ नारी अभियान में जाँचे गए सदस्य	8,19,967	सितंबर 2025
विकलांग व्यक्ति जो SHG से जुड़े	1,73,732	संचयी

स्रोतः BRLPS, जीविका 72वीं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट (जुलाई–सितंबर 2025)।

आजीविका के स्तर पर जीविका खेती, पशुपालन और गैर–कृषि उद्यम तीनों में सक्रिय हैः 20.12 लाख किसान धान की उन्नत पद्धति अपना रहे हैं, 17.72 लाख किचन गार्डन में हैं, और 34,961 उद्यम PMFME योजना से जुड़े हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में 79 लाख परिवारों के आयुष्मान कार्ड बने और एक अभियान में 8.2 लाख से अधिक सदस्यों की जाँच हुई। 1.74 लाख विकलांग व्यक्ति भी SHG से जुड़े हैं, जो समावेश के प्रयास को दर्शाता है। यानी SHG अब ऋण के साथ आजीविका, स्वास्थ्य और बीमा का एक बहु–उद्देश्यीय मंच बन चुके हैं।

- **जहानाबाद बनाम बिहार**

तालिका 7. जहानाबाद और बिहार की तुलना, जनगणना 2011

संकेतक	जहानाबाद	बिहार	अंतर (ज. - बि.)
साक्षरता दर, कुल (%)	66.80	61.80	+5.00 pp
साक्षरता दर, पुरुष (%)	77.66	71.20	+6.46 pp
साक्षरता दर, महिला (%)	55.01	51.50	+3.51 pp
साक्षरता अंतर (पु. - म.), pp	22.65	19.70	+2.95 pp
लैंगिक समानता सूचकांक	0.71	0.72	-0.01
निरक्षरता दर: महिला / पुरुष का अनुपात	2.01	1.68	+0.33
लिंगानुपात	922	918	+4
ग्रामीण जनसंख्या का हिस्सा (%)	88.0	88.7	-0.7 pp

स्रोतः जनगणना 2011, Census2011-co-in (जहानाबाद और बिहार)।

जहानाबाद की कुल साक्षरता (66.80 प्रतिशत) बिहार (61.80 प्रतिशत) से 5 अंक अधिक है और महिला साक्षरता भी राज्य से 3.51 अंक अधिक है। फिर भी महिला–पुरुष का अंतर जहानाबाद में 22.65 अंक है, जबकि बिहार में 19.70 अंक, यानी जिले में पुरुषों की बढ़त महिलाओं से अधिक रही है। महिलाओं में निरक्षरता पुरुषों की 2.01 गुना है, जबकि राज्य में 1.68 गुना। यह दर्शाता है कि जहानाबाद में आँकड़ों का औसत बेहतर होने के बावजूद लैंगिक असमानता राज्य से अधिक है, इसलिए यहाँ महिला–केंद्रित SHG कार्यक्रम का महत्व और बढ़ जाता है।

तालिका 8: NFHS–4 (2015–16): जहानाबाद और बिहार

संकेतक (%)	जहानाबाद	बिहार	अंतर (ज. - बि.)
15-49 आयु की कम वज़न वाली महिलाएँ (BMI 18.5 से कम)	30.6	30.4	+0.2 pp
5 वर्ष से कम आयु के बौने बच्चे	52.1	48.3	+3.8 pp
5 वर्ष से कम आयु के कम वज़न वाले बच्चे	47.1	43.9	+3.2 pp
5 वर्ष से कम आयु के दुबले (वेस्टेड) बच्चे	19.6	20.8	-1.2 pp
0-59 माह के एनीमिया वाले बच्चे	61.4	63.5	-2.1 pp
2,500 ग्राम से कम वज़न के जन्म	13.4	9.5	+3.9 pp

स्रोतः POSHAN जिला पोषण प्रोफ़ाइल, जहानाबाद, NFHS–4 पर आधारित।

पोषण में जहानाबाद की स्थिति बिहार से मिली–जुली है। कम वज़न की महिलाएँ दोनों जगह लगभग तीन में से एक हैं (30.6 और 30.4 प्रतिशत)। जहानाबाद में बौने बच्चे राज्य से 3.8 अंक अधिक हैं और आधे से अधिक (52.1 प्रतिशत) बच्चे बौने हैं, जबकि दुबलेपन और एनीमिया में जिला थोड़ा बेहतर है। जहानाबाद के लिए पोषण सखी जैसे SHG–आधारित प्रयास इसलिए अहम हैं।

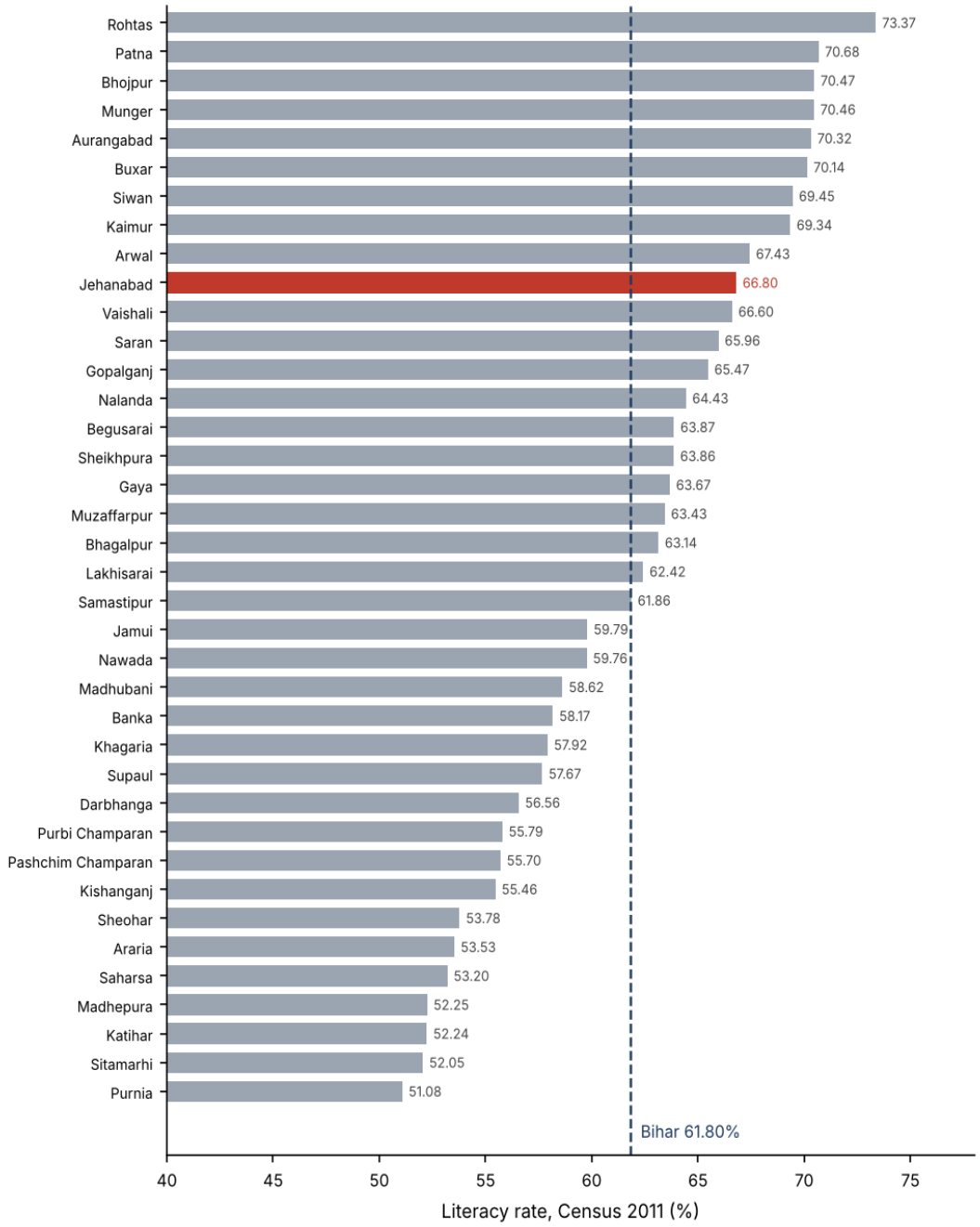
- **बिहार के 38 जिलों में जहानाबाद की स्थिति**

तालिका 9: बिहार के 38 जिलों में साक्षरता और लिंगानुपात, जनगणना 2011

माप	साक्षरता दर (%)	लिंगानुपात	टिप्पणी
जिलों की संख्या	38	38	—
औसत (जिलों का)	61.76	918.5	राज्य: 61.80 / 918
माध्यिका	62.78	918.5	—
मानक विचलन	6.49	27.2	—
न्यूनतम	51.08 (पूर्णिया)	876 (मुंगेर)	—
अधिकतम	73.37 (रोहतास)	1,021 (गोपालगंज)	—
जहानाबाद	66.80	922	—
जहानाबाद की रैंक (38 में)	10वाँ	15वाँ	1 = सबसे ऊपर
जहानाबाद का z-मान	+0.78	+0.13	औसत से ऊपर

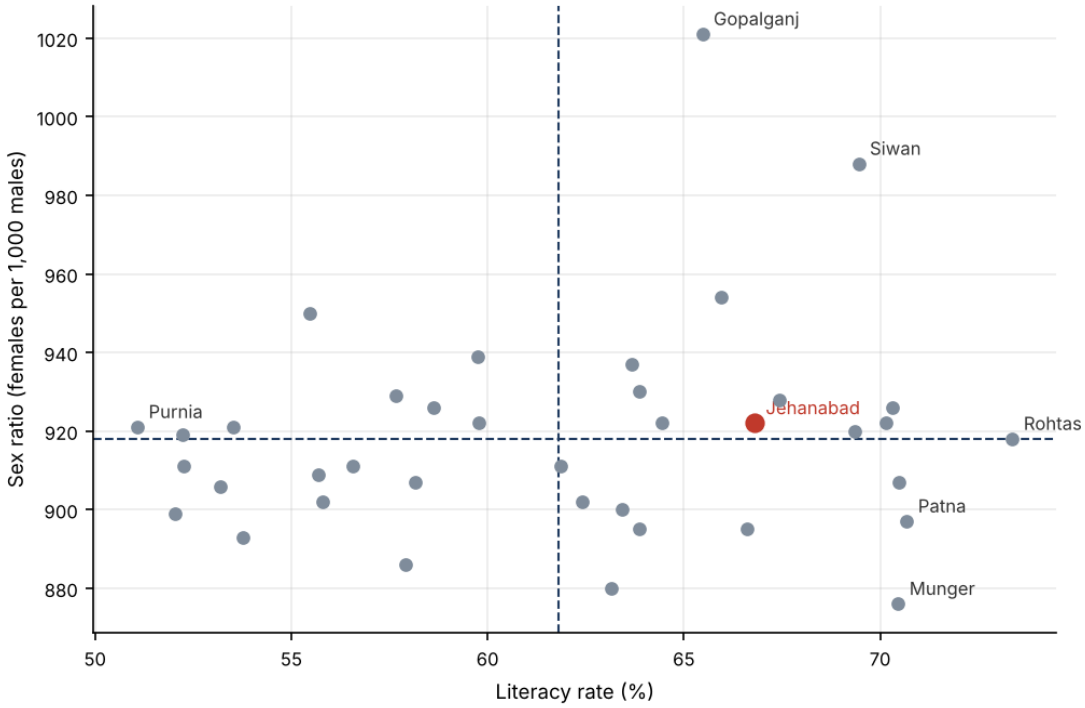
स्रोतः जनगणना 2011, Census2011-co-in की बिहार जिला–सूची।

38 जिलों में साक्षरता दर 51.08 प्रतिशत (पूर्णिया) से 73.37 प्रतिशत (रोहतास) तक फैली है, और जिलों का औसत 61.76 प्रतिशत है। जहानाबाद 66.80 प्रतिशत के साथ 10वें स्थान पर है, जो औसत से 0.78 मानक विचलन ऊपर है। 21 जिले राज्य के औसत (61.80 प्रतिशत) से ऊपर और 17 नीचे हैं, जहानाबाद ऊपर वालों में है। लिंगानुपात में तस्वीर अलग हैः 922 के साथ जहानाबाद 15वें स्थान पर, यानी लगभग औसत ($z = +0.13$) है। 18 जिलों में लिंगानुपात राज्य के 918 से कम है। साक्षरता और लिंगानुपात के बीच सहसंबंध $r = 0.15$ है, यानी बहुत कमज़ोरः जिन जिलों में साक्षरता अधिक है उनमें लिंगानुपात ज़रूरी नहीं कि बेहतर हो।



चित्र 1: बिहार के जिलों की साक्षरता दर, जनगणना 2011 (जहानाबाद लाल रंग में; बिंदीदार रेखा राज्य का मान)।

स्रोतः Census2011-co-in(लेखक की गणना।



चित्र 2: जिलों में साक्षरता दर और लिंगानुपात का संबंध (जहानाबाद लाल बिंदु; रेखाएँ राज्य के मान)।

स्रोतः Census2011-co-in(लेखक की गणना।

तालिका 10: मगध क्षेत्र के पाँच जिले, जनगणना 2011

जिला	लिंगानुपात	साक्षरता दर (%)	जनसंख्या
औरंगाबाद	926	70.32	2,540,073
अरवल	928	67.43	700,843
जहानाबाद	922	66.80	1,125,313
गया	937	63.67	4,391,418
नवादा	939	59.76	2,219,146

स्रोतः Census2011-co-in।

मगध क्षेत्र के पाँच जिलों में जहानाबाद साक्षरता में तीसरे स्थान पर है (औरंगाबाद 70.32 और अरवल 67.43 के बाद), पर इन पाँचों में लिंगानुपात सबसे कम (922) जहानाबाद का है। नवादा में साक्षरता सबसे कम (59.76 प्रतिशत) है। यानी जहानाबाद में शिक्षा का स्तर क्षेत्र में ठीक–ठाक है, परंतु महिलाओं की संख्या के लिहाज़ से स्थिति कमज़ोर है।

- **संकेतकों का समेकित सार**

तालिका 11: बिहार की महिलाओं की स्थितिः मुख्य संकेतक

क्षेत्र	मुख्य मान	अर्थ
जनसंख्या	918 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुष	महिलाएँ पुरुषों से कम; जहानाबाद में 922
साक्षरता	महिला 51.50% (पुरुष 71.20%)	अंतर 19.70 pp; GPI 0.72
स्कूल जाना	39% महिलाएँ कभी स्कूल नहीं गईं	NFHS-5

रोज़गार	केवल 17% ने कोई काम किया	83% ने कोई काम नहीं किया
संगठन	11.4 लाख SHG; 1.40 करोड़ परिवार	12.3 परिवार प्रति SHG
वित्त	ऋण वापसी 98.06%; बचत खाते 92.0% SHG	अनुशासन और पहुँच के संकेत
जहानाबाद की स्थिति	अंतर 22.65 pp बनाम 19.70 pp	राज्य से अधिक लैंगिक असमानता
जिला-वार स्थिति	साक्षरता में 38 में 10वाँ; लिंगानुपात में 15वाँ	साक्षरता में ऊपर; लिंगानुपात औसत

विवेचना

- **साक्षरता और एजेंसी**

बिहार की महिलाएँ कमज़ोर संसाधनों से शुरू करती हैं: पुरुषों से 19.70 अंक कम साक्षरता, केवल 55 प्रतिशत साक्षर प्रजनन–आयु वर्ग की महिलाएँ और 83 प्रतिशत का रोज़गार से बाहर रहना। SHG उन्हें ऋण और सामूहिक कार्य का मंच देते हैं और जीविका के आँकड़े बड़े पैमाने पर वित्तीय समावेशन दिखाते हैं। परंतु जिस महिला को पढ़ना–लिखना नहीं आता, वह समूह के रजिस्टर, पासबुक और ऋण की किस्तों की जाँच के लिए दूसरों पर निर्भर रहेगी। काबीर (1999) के ढाँचे में इसका अर्थ है कि संसाधन मिलने पर भी एजेंसी कमज़ोर रह सकती है। इसलिए साक्षरता को SHG कार्यक्रम का सहायक नहीं, बल्कि केंद्रीय घटक माना जाना चाहिए।

- **पोषण और सामाजिक भूमिका**

जहानाबाद में बच्चों का बौनापन राज्य से अधिक है और हर तीन में से एक महिला कम वज़न की है। साथ ही, पोषण सखी और शौचालय अभियान के उदाहरण दिखाते हैं कि SHG की महिलाएँ अपने गाँव में स्वास्थ्य और स्वच्छता व्यवहार बदलने में भूमिका निभा रही हैं (विश्व बैंक ब्लॉग; खान, 2017)। मंडल व अन्य (2025) भी बताते हैं कि SHG मंच से स्वास्थ्य और पोषण व्यवहार प्रभावित किए जा सकते हैं। इसलिए SHG का सामाजिक योगदान आर्थिक योगदान जितना ही महत्वपूर्ण हो सकता है।

- **आर्थिक प्रभाव की अनिश्चितता**

सर्वोत्तम मूल्यांकन बताते हैं कि ेभ्ळ सदस्यता और सस्ता ऋण अपने आप उपभोग या सशक्तिकरण में नहीं बदलते (हॉफ़मैन व अन्य, 2018)। इसलिए जीविका के वित्तीय आँकड़े, जैसे ₹59,156 करोड़ का ऋण प्रवाह और 98.06 प्रतिशत वापसी, कार्यक्रम की संस्थागत सफलता दिखाते हैं, पर परिवारों की आय और महिलाओं की निर्णय–शक्ति में बदलाव के लिए अलग प्रमाण चाहिए। आईएफ़एमआर लीड का यह निष्कर्ष भी याद रखना चाहिए कि पहुँच के बावजूद भागीदारी सीमित रह सकती है।

नीतिगत सुझाव

- साक्षरता और वित्तीय कौशल: SHG बैठकों में प्रौढ़ साक्षरता और पासबुक पढ़ने, हिसाब रखने का प्रशिक्षण जोड़ा जाए ताकि निरक्षर सदस्य दूसरों पर निर्भर न रहें।
- महिलाओं के अपने खाते: परिवार के बैंक खाते के बजाय महिला के नाम के खाते और बैंक सखी सेवाओं का विस्तार हो, ताकि बचत और ऋण पर उसका स्वयं का नियंत्रण बढ़े।
- रोज़गार और आजीविका: 17 प्रतिशत महिला–रोज़गार को बढ़ाने के लिए खेती के साथ गैर–कृषि उद्यमों, जैसे PMFME और दीदी की रसोई, का विस्तार जिला–स्तर पर हो।

- पोषण पर निरंतर ध्यानः पोषण सखी जैसे सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के माध्यम से कम वज़न की महिलाओं और बौने बच्चों वाले परिवारों तक पहुँच बढ़ाई जाए, विशेषकर जहानाबाद जैसे जिलों में जहाँ बौनापन राज्य से अधिक है।

निष्कर्ष

बिहार के द्वितीयक आँकड़ों से स्पष्ट है कि जीविका ने 11.4 लाख SHG और 1.40 करोड़ परिवारों का विशाल ढाँचा खड़ा किया है जिसमें बचत खाते, ऋण, बीमा, आजीविका और स्वास्थ्य सेवाएँ शामिल हैं। इसी समय राज्य की महिलाएँ साक्षरता (51.50 प्रतिशत), स्कूली शिक्षा और रोज़गार (17 प्रतिशत) में पीछे हैं। जहानाबाद साक्षरता में बिहार के 38 जिलों में 10वें स्थान पर है और लिंगानुपात में लगभग औसत (15वाँ) है। सामान्य साक्षरता बिहार से बेहतर होने पर भी महिला–पुरुष का अंतर 22.65 अंक के साथ राज्य (19.70 अंक) से अधिक है। इसलिए बिहार में, और विशेषकर जहानाबाद में, SHG की सफलता केवल बचत और ऋण से नहीं, बल्कि साक्षरता, रोज़गार, पोषण और निर्णय–क्षमता में सुधार से मापी जानी चाहिए। इन्हीं विषयों को आगे के प्राथमिक सर्वेक्षण का केंद्र बनाना उचित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आइडियाज़ फ़ॉर इंडिया। क्या स्वयं सहायता समूह उपयोगी हैं? (जीविका का मूल्यांकन)। https%@@www-ideasforindia-in@topics@poverty&inequality@are&self&help&groups&helpful
2. इंडियास्टैट। जहानाबाद (बिहार) का जिला–स्तरीय विवरण। https%@@www-indiastatdistricts-com@bihar@jehanabad&district
3. आईएफ़एमआर लीड। बिहार में जीविका परियोजना का प्रभाव मूल्यांकन, अध्ययन सार। https%@@ifmrlead-org@\p¾4531
4. आईएफ़पीआरआई। महिला समूहों के ज़रिये पोषण में सुधारः सहरसा, बिहार में जीविका बहुक्षेत्रीय अभिसरण पायलट का मूल्यांकन। https%@@www-ifpri-org@node@21666
5. काबीर, एन. (1999)। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँः महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। डेवलपमेंट एंड चेंज, 30(3)। https%@@doi-org@10-1111@1467&7660-00125
6. खान, एम. आई. (2017)। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं ने शौचालय बनाने की पहल की। विलेज स्क्वायर। https%@@villagesquare-in@women&take&initiative&build&toilets&rural&bihar@
7. जनगणना 2011, जहानाबाद जिला। Census2011-co-inA https%@@www-census2011-co-in@census@district@91&jehanabad-html
8. जनगणना 2011, बिहार के जिले। Census2011-co-inA https%@@www-census2011-co-in@census@state@districtlist@bihar-html
9. जनगणना 2011, बिहार राज्य। Census2011-co-inA https%@@www-census2011-co-in@census@state@bihar-html
10. दत्ता, यू., हॉफ़मैन, वी. और राव, वी. (2015)। जीविका का प्रभाव मूल्यांकन। ।म्। त्ब्ज रजिस्ट्री, 24 अप्रैल। https%@@doi-org@10-1257@rct-570&1-0
11. पोषण (POSHAN)। जिला पोषण प्रोफ़ाइलः जहानाबाद, बिहार, छथ्थै–4 पर आधारित। https%@@www-slideshare-net@slideshow@poshan&district&nutrition&profilejehanabadbihar&64472126@64472126

12. बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोन्नति समिति (2025)। जीविका 72वीं त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट, जुलाई–सितंबर 2025। https%@@brlps-in@UplodFiles@Files@JEEVIKAþ2072ndþ20þ20Quarterlyþ20Progressþ20Reportþ20¼þ20July&Sepþ202025½&c-pdf

13. मंडल, एस., बिष्ट, आई., अखौरी, एस., चौधरी, आई., प्रधान, एन., कुमारी, एस., अखौरी, एस. एस., झा, आर. के., सिंह, एम. के., दास, एस., पुर्टी, ए., मुखर्जी, ए. और महापात्रा, टी. (2025)। बिहार में स्वास्थ्य और पोषण व्यवहार को प्रेरित करने में महिला स्वयं सहायता समूहों के साथ तकनीकी सहयोग कार्यक्रम की प्रभावशीलताः बहु–घटक विश्लेषण। फ्रंटियर्स इन पब्लिक हेल्थ, 12। https%@@doi-org@10-3389@fpubh-2024-1389706

14. मधुबनी जिले का अध्ययनः महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका। सोशल साइंस जर्नल फ़ॉर एडवांस्ड रिसर्च, 3(6)। https%@@doi-org@10-54741@ssjar-3-6-2

15. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS–5) 2019–21: बिहार। अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (IIPS) और ICFA https%@@dhsprogram-com@pubs@pdf@FR374@FR374&Bihar-pdf

16. विश्व बैंक ब्लॉग। भारतः बिहार में ग्रामीण महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण में सुधार। https%@@blogs-worldbank-org@en@endpovertyinsouthasia@india&improving&health&and&nutrition&rural&women&and&children&bihar

17. विश्व बैंक डेटा कैटलॉग। भारतः जीविका आजीविका परियोजना, चरण 1, एक–चरण पूर्वव्यापी मूल्यांकन, घरेलू सर्वेक्षण 2011। https%@@datacatalog-worldbank-org@search@dataset@0064626

18. विश्व बैंक डेटा कैटलॉग। भारतः बिहार में जीविका बहुक्षेत्रीय अभिसरण पहल का प्रभाव मूल्यांकन सर्वेक्षण, 2018। https%@@datacatalog-worldbank-org@search@dataset@0064607@ india&impact&evaluation&survey&of&jeevika&multisectoral&convergence&initiative&in&bihar&2018

19. सिवाच, जी., डी हूप, टी., पॉल, एस. और बेलियाकोवा, वाई. (2020)। बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना (जीविका) का लागत और लागत–लाभ विश्लेषणः प्रारंभिक प्रमाण। शोध टिप्पणी, इविडेंस कंसोर्टियम ऑन विमेंस ग्रुप्स। https%@@knowledgecommons-popcouncil-org@departments&sbsr&pgy@1266

20. हॉफ़मैन, वी., राव, वी., दत्ता, यू., सान्याल, पी., सुरेंद्र, वी. और मजूमदार, एस. (2018)। भारत में बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना के गरीबी और सशक्तिकरण पर प्रभाव। 3पम इम्पैक्ट इवैल्यूएशन रिपोर्ट 71। नई दिल्लीः इंटरनेशनल इनिशिएटिव फ़ॉर इम्पैक्ट इवैल्यूएशन। https%@@www-3ieimpact-org@sites@default@files@2018&08@IE71&Bihar&livelihoods-pdf

❑❑❑